अंतर्राष्ट्रीय सूनामी अनुक्रिया का मूल्यांकन, सहायता खर्च में असमानता के मुख्य तथ्य

आज एक बड़ा स्वतंत्र मूल्यांकन प्रकाशित हुआ है जो आपातकालीन धन की उचित प्रणाली के बारे में है जिससे सभी प्रभावित लोग कष्टों एवं मृत्यु से बाहर निकलें और अपना जीवन पुनःस्थापित करें । विश्व द्वारा बढ़ती हुई प्राकृतिक आपदाओं का सामना करने के लिए यह अनिवार्य है ।

'सूनामी मूल्यांकन दल' जो मानव सहायता को बढ़ाने हेतु विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा किया गया प्रयास है, 2004 के एशियाई सूनामी में रिकॉर्ड तोड़ दिए गए दान के लिए जनता की सराहना करना, इतने विस्तृत रूप से आए धन वितरण में आई त्रुटियों को कैसे उजागर किया जाए, कैसे सहायता राशि बढ़ी और उसका खर्च कैसे हुआ ?

कुल में से कम से कम 13-5 अरब यूएस डॉलर बढ़ोतरी हुई, 5-5 अरब यूएस डॉलर आम जनता से, 7100 यूएस डॉलर से अधिक प्रत्येक प्रभावित व्यक्ति के लिए था । यह कड़ी विषमता उन प्रति व्यक्ति 3 यूएस डॉलर की थी जिन्हें 2004 में बंगला देश में आई बाढ़ से प्रभावित लोगों पर खर्च किया गया था ।

टीईसी की रिपोर्ट में बताया गया है कि आपातकालीन सहायता केवल आवश्यकता के आधार पर नहीं दी गई, अपितु राजनैतिक दबाव एवं दानकर्ता एजेंसियों के लोकप्रियों को भी दी गई । धन वितरण की प्रक्रिया को निष्पक्ष, लचीली, पारदर्शी और अच्छे दान के सिद्धांतों की पंक्ति में रखने के लिए सरकार ने रिपोर्ट के स्वतंत्र प्रबोधन हेतु मंगवाया है ।

टीईसी रिपोर्ट के मुख्य लेखक श्री जॉन टेलफोर्ड ने कहा है कि 'विस्तृत प्रचार के कारण इतनी बड़ी मात्रा और तेजी से धन प्राप्त हुआ है ।' लेकिन जनता के पैने ध्यान ने एजेंसियों को जल्दी एवं स्पष्ट रूप से खर्च के लिए दवाब डाला, प्रायः औपचारिक आवश्यकताओं के निर्धारण को नजरअंदाज कर एवं विपत्ति के बाद की प्रतिपूर्ति की जटिलता का वास्तविक अनुमान न लगाना ।' अन्य भूमंडलीय आपदाओं का पर्याप्त प्रचार न होने के कारण उन्हें थोड़ा ही धन प्राप्त होता है ।श्री टेलफोर्ड ने आगे बताया कि विभिन्न आपातकालीन स्थितियों में धन वितरण की असमानता स्पष्ट रू॰ से इस प्रकार देखी जा सकती है कि बढ़ते कुपोषण के कारण भी सूडान के लोगों के राशन की मात्रा आधी कर दी गई, जब कि अफगानिस्तान को प्रचूर मात्रा में धन दिया गया ।

रिपोर्ट में दान देने वाली सरकारों से अपील की गई है कि वे अति जोखिम के मण्डलों वाले राज्यों में जोखिम को कम करने एवं आपातकालीन स्थिति में अच्छी प्रतिक्रिया दिखाने हेतु विपत्ति से पहले ही सामंजस्य बनाकर रखें । अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों से कहा गया है कि वे कार्य करते रहें और स्थानीय ढांचे को पहले से ही मजबूत बनाएं बजाय इसके कि आपदा के समय, जब कि प्रभावित देश पीड़ित हो ।

वास्तव में स्थानीय रूप प्रभावित लोगों एवं उनके पड़ोसियों ने अंतर्राष्ट्रीय आपदा सहायता टीम के पहुंचने से पहले ही काफी लोगों की जान बचा ली थी । श्री टेलफोर्ड ने कहा- जब कि सहायक एजेंसियां प्रभावित आबादी को सुरक्षा प्रदान करने के लिए मान्य हैं, उनको आगे क्या करना है, इसकी योजना बनाने की आवश्यकता है, उनको स्वयं को दायित्व प्रबंधन में भी सम्मिलित करने की आवश्यकता है । यह मुख्य रूप से महत्वपूर्ण है कि आपातकालीन सहायता की प्राथमिकता तेजी से उन लोगों के लिए परिवर्तित होती है जिनका जीवन पुनःस्थापित करना है । इस रिपोर्ट में एसे परिवर्तनों की महत्ता एवं लोगों की लम्बे समय सीमा की प्राथमिकताओं का ध्यान रखने के लिए अनेक जगह सिफारिश की गई है ।

टीईसी की रिपोर्ट में सरकार पर इस बात के लिए भी जोर दिया गया है वे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को धन दें जिससे आपातकालीन स्थिति में कार्मिक, तालमेल और गुणवत्ता नियंत्रण में वृद्धि की जा सके । यद्यपि यह 'अमूर्त' निवेश है, श्री टेलफोर्ड ने इसकी महत्ता पर प्रकाश डाला । आधुनिक समय की आपदाओं का पैमाना एवं उनकी आवृत्ति बढ़ रही है और अंतर्राष्ट्रीय सहायता प्रणाली की गुणवत्ता, क्षमता एवं नियामक वर्तमान में इसको संभालने के लिए अपर्याप्त हैं । जनता को भी ऐसा नहीं सोचना चाहिए की एक बार चैक देने से उनका दायित्व समाप्त हो गया । स्वतंत्र नियामक और पारदर्शी सूचना पर जोर देना चाहिए जिससे एजेंसियों के पेशेवर मानदण्डों को कायम रखा जा सके, जिसके लिए उनकी स्थापना हुई थी ।

यह मूल्यांकन मानव समुदाय के वर्ष 1996 से विस्तृत पुनर्अवलोकन का प्रतिनिधित्व करता है एवं रिपोर्ट तथा प्रक्षेपित घटनाओं का उद्देश्य है कि वे क्षेत्र को इसकी जानकारी दे, जनता को उसकी जवाबदेही के बारे में बताएं ।

अन्य सूचना हेतु

पत्रकारों हेतु उनके अनुरोध पर इंटरनेट पर भी सामग्री उपलब्ध है जिसके अंतर्गत छायाचित्र (फोटोग्राफ्स) एवं लंदन तथा जिनेवा में किए गए प्रक्षेपण की विस्तृत जानकारी दी गई है ।

Media consultant : Sherylin Thompson s.thompson@odi.org.uk , phone: ++44 (0) 20 7922 0314 mobile +44 7940 4516 806, www.tsunami-evaluation.org

Currency converter: www.oanda.com/convert/classic

संपादकों के लिए टिप्पणी

सूनामी मूल्यांकन दल (टीईसी) एक स्वतंत्र अध्ययन है एवं मानव क्षेत्र में प्रथम उत्तरदायी है । 1990 के मध्य में जब वांडा बहु-दानियों का मूल्यांकन हुआ था तब से टीईसी की सदस्य एजेंसियों द्वारा किया गया कार्य मानव अनुक्रिया के गहन अध्ययन का प्रतिनिधित्व करता है, एवं 10 वर्षों में पहली बार इस क्षेत्र में समग्र रूप में स्वयं की समीक्षा की है।

टीईसी के तीन उद्देश्य हैं

1 मानवीय क्रिया की गुणवत्ता को बढ़ाना जिसमें लम्बे अंतराल की प्रतिपूर्ति और विकास की सहलग्नता सम्मिलित है- सूनामी की अंतर्राष्ट्रीय अनुक्रिया के माध्यम से अध्ययन करना ।

2 दानकर्ता एवं प्रभावित देश की आबादी दोनों को समेकित अनुक्रिया हेतु जवाबदेही उपलब्ध कराना ।

3 भविष्य में सहकर्ताओं के मूल्यांकन हेतु टीईसी की पहुंच का संभावित नमूने के रूप में जांच करना ।

मानवीय क्षेत्र के एक सिरे से दूसरे सिरे तक टीईसी की 40 से अधिक सदस्य एजेंसियां हैं । ये एजेंसियां संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों के विस्तृत दल, दानकर्ताओं, अंतर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठन, रेडक्रास, रेडक्रिसेन्ट आंदोलन एवं अनुसंधान समूहों का प्रतिनिधित्व करती हैं ।

रिपोर्ट में सूनामी अनुक्रिया के पहले 8 से 11 महीनों का समावेश है ।

अन्य सूचना हेतु

http://www.odi.org.uk/hpg/Good_humanitarian_donorship.htm